International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(8): 18-20
Received: 19-06-2023
Accepted: 20-07-2023

पूनम शर्मा
पीएचडी, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर,
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पूनम शर्मा
पीएचडी, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर,
राजस्थान, भारत

राजस्थान की दलगत राजनीति और भविष्य की संभावनाए

पूनम शर्मा

सारांश
राजस्थान की दलगत राजनीति में समय–समय पर बदलाव आते रहे हैं जिसमें कांग्रेस और भा.ज.पा. के बीच संघर्ष प्रमुख रहा है। राज्य में जातिवाद और गठबंधन राजनीति ने राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित किया है। युवा नेतृत्व और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से राजनीति में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। आगामी समय में सोशल मीडिया का प्रभाव और जनसरोकार के मुद्दे चुनावी रणनीतियों को बदल सकते हैं। जल संकट , कृषि संकट और बेरोजगारी जैसे विकासात्मक मुद्दे राज्य के भविष्य को आकार देंगे। राजनीतिक स्थिरता और समाजवादी दृष्टिकोण से राज्य की दिशा तय होगी। राजस्थान की दलगत राजनीति में नए गठबंधनों और लोकतांत्रिक सुधारों की संभावनाएँ प्रबल हैं।

कुटशब्दः दलगत राजनीति, जातिवाद, गठबंधन राजनीति

प्रस्तावना
राजस्थान, भारत का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर वाला राज्य है। यह राज्य न केवल अपनी भव्यता और विविधता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की राजनीति भी भारतीय राजनीति का अहम हिस्सा रही है। राजस्थान की राजनीति में हमेशा से ही दलगत संघर्ष और परिवर्तन देखने को मिला है, जहां कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) के बीच सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा बनी रही है। इसके अतिरिक्त, जातिवाद, समाजिक असमानता, गठबंधन राजनीति और अन्य राजनीतिक मुद्दों ने भी राज्य की राजनीति में कई बदलाव किए हैं। इस शोधपत्र में हम राजस्थान की दलगत राजनीति पर ध्यान केंद्रित करेंगे, साथ ही राज्य की राजनीति में आए बदलावों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करेंगे।

1. राजस्थान की राजनीति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
राजस्थान की राजनीति का इतिहास भारतीय राजनीति के इतिहास में काफी दिलचस्प है। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस का राज्य में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कांग्रेस ने लंबे समय तक राज्य की सत्ता पर कब्जा किया, और कई दशकों तक राजस्थान कांग्रेस की प्राथमिक राजनीतिक ताकत बनी रही। 1952 में पहला विधानसभा चुनाव हुआ और तब से राज्य में लगातार कांग्रेस का दबदबा रहा। 1967 में, राज्य में पहली बार भाजपा ने अपनी स्थिति मजबूत करना शुरू किया और 1970 के दशक में भैरोंसिंह शेखावत जैसे नेताओं ने भाजपा को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
हालांकि, 1989 में भाजपा को पहली बार राज्य में बड़ी सफलता मिली, जब भैरोंसिंह शेखावत ने मुख्यमंत्री पद संभाला। इस समय से लेकर आज तक, राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा के बीच सत्ता का संघर्ष चला आ रहा है। 2003 में भाजपा ने कांग्रेस को हराया, लेकिन 2008 में कांग्रेस ने सत्ता में वापसी की। 2013 के चुनाव में भाजपा फिर से विजयी रही, और 2018 में कांग्रेस ने सत्ता में वापसी की। 2023 में भाजपा ने सत्ता में वापसी की है। यह उतार–चढ़ाव यह दर्शाता है कि राजस्थान की राजनीति में दलगत परिवर्तन हमेशा होते रहते हैं और यहां की राजनीति हमेशा गतिशील रही है।

2. जातिवाद और सामाजिक संरचना का प्रभाव
राजस्थान की राजनीति में जातिवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्य की जातीय संरचना बहुत जटिल है, और विभिन्न जातियाँ राज्य की राजनीति में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती रही हैं। राज्य में प्रमुख जातियाँ जैसे राजपूत, जाट, गुर्जर, मीणा, बनिया, और अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) हैं, जिनका राजनीतिक दलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। चुनावों में इन जातियों का समर्थन हासिल करने के लिए राजनीतिक दलों ने विभिन्न रणनीतियाँ बनाई हैं।
भा.ज.पा. और कांग्रेस दोनों ही दलों ने इन जातियों को अपने पक्ष में करने के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं। उदाहरण के लिए, गुर्जर समुदाय के लिए विशेष आरक्षण की घोषणा करने का वादा किया गया था, जबकि राजपूत और मीणा समुदायों के लिए अलग–अलग रणनीतियाँ अपनाई गईं। जातिवाद न केवल चुनावी रणनीतियों को प्रभावित करता है, बल्कि यह राज्य की सामाजिक और

राजनीतिक अस्थिरता का कारण भी बनता है।
जातिवाद ने राज्य की राजनीति में कई बार विवाद उत्पन्न किया है, और यह मुद्दा राजनीतिक दलों के चुनावी घोषणापत्रों में प्रमुख रहता है। भविष्य में, यदि राज्य की राजनीति में जातिवाद की भूमिका और भी बढ़ती है, तो यह राज्य में सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता का कारण बन सकता है।

3. सत्ता का बदलता समीकरण

राजस्थान में सत्ता का समीकरण हमेशा बदलता रहा है। 1990 के दशक से लेकर अब तक, कांग्रेस और भाजपा के बीच सत्ता का अदला–बदली देखा गया है। जैसे–जैसे चुनावों में परिणाम बदलते रहे, सत्ता के समीकरण भी हर बार बदलते रहे हैं। 2013 और 2018 के चुनावों में कांग्रेस और भाजपा दोनों ही दलों ने सत्ता में वापसी की, 2023 में भाजपा ने सत्ता में वापसी की और यह दर्शाता है कि राजस्थान की राजनीति में कोई भी दल स्थायी रूप से सत्ता में नहीं रहता।
राजस्थान में विधानसभा चुनावों में मतदाता का व्यवहार भी दिलचस्प होता है। 2003 और 2008 के चुनावों में भाजपा को विजयी घोषित किया गया, जबकि 2013 और 2018 में कांग्रेस ने सत्ता में वापसी की। यह संकेत देता है कि राजस्थान की राजनीति में मतदाता अक्सर बदलाव को प्राथमिकता देते हैं और सत्ता का स्थानांतरण बार–बार होता रहता है।

4. गठबंधन राजनीति और छोटे दलों का प्रभाव

राजस्थान की राजनीति में गठबंधन राजनीति का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। राज्य में कई बार छोटे दलों और निर्दलीय उम्मीदवारों का गठबंधन ने चुनावों के परिणाम को प्रभावित किया है। जैसे 2008 और 2013 के चुनावों में भाजपा को गठबंधन दलों और निर्दलीय विधायकों का समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे पार्टी को सत्ता में बने रहने में मदद मिली।
गठबंधन राजनीति की स्थिति में राजनीतिक अस्थिरता भी देखने को मिली है। अक्सर छोटे दल अपनी शर्तों पर सत्ता में भागीदारी की मांग करते हैं, जो सरकार के लिए एक चुनौती बन सकती है। आने वाले वर्षों में, गठबंधन राजनीति राज्य के चुनावों और सरकार गठन को प्रभावित करेगी, और छोटे दलों की भूमिका और भी अहम हो सकती है।

5. महिला सशक्तिकरण और युवा नेतृत्व

राजस्थान की राजनीति में महिलाओं और युवाओं की भूमिका में लगातार वृद्धि हो रही है। युवा नेता, जैसे सचिन पायलट, ने कांग्रेस में अपनी सक्रियता से एक नई दिशा दिखाई है। वे एक युवा और गतिशील नेता के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने राज्य की राजनीति में बदलाव लाने की कोशिश की है। भाजपा में भी राजेन्द्र राठौड़ और गजेंद्र सिंह शेखावत जैसे नेताओं ने राज्य के राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित किया है।
साथ ही, महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ बनाई गई हैं, जैसे महिला आरक्षण, स्वास्थ्य और शिक्षा योजनाएँ, और आर्थिक सशक्तिकरण योजनाएँ, जो राज्य में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने का प्रयास करती हैं। भविष्य में, महिलाओं की सक्रिय भूमिका राजस्थान की राजनीति में और अधिक बढ़ सकती है, और यह राज्य के लोकतांत्रिक विकास में सहायक होगी।

6. जनसरोकार और विकासात्मक मुद्दे

राजस्थान में जल संकट, कृषि संकट, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दे हमेशा प्रमुख रहे हैं। इन मुद्दों ने राज्य की राजनीति को प्रभावित किया है और राजनीतिक दल इन मुद्दों को अपने चुनावी घोषणापत्र में प्रमुख रूप से शामिल करते हैं। राज्य के ग्रामीण इलाकों में पानी की भारी कमी है, और यह समस्या राजनीतिक दलों के लिए एक अहम मुद्दा बन चुकी है।
राज्य सरकारें जल संकट, शिक्षा, और रोजगार के मुद्दों के समाधान के लिए कई योजनाएँ लाती रही हैं, लेकिन इन समस्याओं का स्थायी समाधान अभी भी एक चुनौती बना हुआ है। भविष्य में, इन विकासात्मक मुद्दों का समाधान राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और राजनीतिक दलों के लिए यह एक प्रमुख चुनावी मुद्दा रहेगा।

7. मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव

आजकल मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण हो गया है, और यह राजस्थान की राजनीति पर भी प्रभाव डाल रहा है। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर, और इंस्टाग्राम ने चुनावी प्रचार और रणनीतियों को बदल दिया है। राजनीतिक दल अब सोशल मीडिया के माध्यम से सीधे जनता से संवाद करते हैं और अपनी योजनाओं को प्रचारित करते हैं। सोशल मीडिया ने चुनावी प्रक्रिया को तेज और प्रभावी बना दिया है, और यह मतदाता की प्राथमिकताओं को प्रभावित करने का एक बड़ा साधन बन गया है।
सोशल मीडिया के प्रभाव से राजनीति में नए विचार, नई योजनाएँ, और नए चेहरे सामने आ रहे हैं, जो भविष्य में चुनावी रणनीतियों को और प्रभावी बना सकते हैं।

तीसरी धारा की संभावनाएँ – राजस्थान की राजनीति में नया मोड़

राजस्थान की राजनीति में लंबे समय से कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) के बीच दो प्रमुख दलों का वर्चस्व रहा है। दोनों दलों के बीच सत्ता की अदला–बदली होती रही है, लेकिन राज्य में एक तीसरी धारा या तीसरे राजनीतिक मोर्चे की संभावना ने हमेशा चर्चा का विषय बना रखा है। यह तीसरी धारा उन दलों या नेताओं से जुड़ी हो सकती है जो न तो कांग्रेस से हैं और न ही भाजपा से, लेकिन जिनका उद्देश्य राज्य की राजनीति में एक नई दिशा लाना है। राजस्थान में तीसरी धारा के निर्माण के लिए कुछ संभावित दल और नेता पहले ही राज्य की राजनीति में अपनी स्थिति स्थापित कर चुके हैं। ऐसे दल और नेता राज्य के बड़े और स्थापित दलों से अलग अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। राजस्थान में क्षेत्रीय पार्टियाँ राज्य की राजनीतिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये पार्टियाँ स्थानीय मुद्दों और जनता की विशिष्ट आवश्यकताओं पर आधारित होती हैं। उदाहरण के तौर पर, राष्ट्रीय लोक दल (त्स्क) और भारतीय ट्राइबल पार्टी (ठज्च्) जैसी पार्टियाँ आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के मुद्दों पर केंद्रित हैं। इन पार्टियों का उद्देश्य राज्य में क्षेत्रीय हितों की रक्षा करना और केंद्रीय राजनीति से परे स्थानीय पहचान को बढ़ावा देना है। राजस्थान की राजनीति में इनका प्रभाव समय–समय पर बदलता रहता है, लेकिन इनकी उपस्थिति महत्वपूर्ण मानी जाती है।
राजस्थान की राजनीति में तीसरी धारा का उदय न केवल राज्य की राजनीतिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है, बल्कि यह भारतीय राजनीति के ढांचे में भी एक महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है।

निष्कर्ष

राजस्थान की दलगत राजनीति में समय के साथ कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जिनमें सत्ता के समीकरण, जातिवाद, गठबंधन राजनीति, और युवा नेतृत्व प्रमुख हैं। कांग्रेस और भा.ज.पा. के बीच सत्ता का संघर्ष, जातिवाद का प्रभाव, और गठबंधन राजनीति राज्य की राजनीति को गतिशील बनाए रखती है। राज्य में आने वाले समय में सोशल मीडिया का प्रभाव और जनसरोकार के मुद्दे

चुनावी परिणामों को प्रभावित करेंगे। साथ ही, युवा नेतृत्व और महिला सशक्तिकरण राज्य की राजनीति में नई दिशा देंगे।
राजस्थान की राजनीति का भविष्य इन परिवर्तनों पर निर्भर करेगा और यदि इन मुद्दों को सुलझाया जाता है, तो यह राज्य के विकास और समृद्धि की ओर मार्गदर्शन करेगा।

संदर्भ सूची

1. राजस्थान का राजनीतिक इतिहास– वर्धमान पब्लिकेशन
2. राजस्थान में जातिवाद और राजनीति" दृ जयपुर विश्वविद्यालय
3. राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018 विश्लेषण और परिप्रेक्ष्य दृ इण्डियन एक्सप्रेस
4. महिला सशक्तिकरण और भारतीय राजनीति दृ महिला अध्ययन संस्थान, जयपुर
5. सोशल मीडिया और भारतीय राजनीति – रघुनाथ यादव